।। ओ३म् ।।

प्रभु से विनय

आज हृदय तो मेरा कुछ और ही पुकार रहा है। मैं तो अपने प्रभु से कहा करता हूँ हे परमदेव! तू कल्याण करने वाला है। आज संसार में प्रत्येक मानव, प्रत्येक देव कन्या के हृदय में उस उज्ज्वलता को दे जो आपने सृष्टि के प्रारम्भ में प्रत्येक वेद मन्त्र द्वारा हमें प्रेरणा दी है। उस प्रेरणा को पुनः से जागृत कर। विधाता! आपने सृष्टि का निर्माण किया और सर्वप्रथम मानव के लिए ज्ञान का स्रोत दिया। उस आनन्द के स्रोत को आज भी दे? किसको दे? महान पात्रों को दे। आज हमारे हृदय को पवित्र बना जिससे हम संसार में उज्ज्वल बनें। विधाता! जब आपकी कृपा होगी तब आपकी दया के पात्र बनेंगे। हे भगवन! तू दया कर और इतनी दया कर कि हमारी आत्मा के द्वारा कोई दोष न आए। विधाता! जब हमारी आत्मा के द्वारा नाना प्रकार के दोष आ जायेंगे तो हमारा जीवन, जीवन न रहेगा। प्रभु! दया कर।

पूज्यपाद–गुरुदेव

(यज्ञ प्रसाद अर्थात् यज्ञ का महत्त्व)

अँक : 507 समग्र अँक : 582
वर्ष : 43 समग्र वर्ष : 49

अनुक्रम

क्रम संख्या	विषय		पृष्ठ संख्या
1.	प्रभु से विनय	पूज्यपाद–गुरुदेव	3
2.	अनुक्रम		4
3.	चरित्र और मानवीयता	पूज्यपाद–गुरुदेव	5–20
4.	ब्रह्मयाग	पूज्यपाद–गुरुदेव	21–28
5.	मानव योगी कैसे बने	पूज्यपाद–गुरुदेव	29–32
6.	Spiritual Lights (Contd.)	Pujyapad Gurudev	33–37
7.	दान, पुस्तकों की सूची, प्राप्ति के स्थान व सूचना आदि		38–42

सूचना

पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज द्वारा संस्थापित वैदिक अनुसन्धान समिति (पंजी.) दिल्ली को दानदाताओं द्वारा दान देने पर आयकर विभाग की धारा 80 जी के अन्तर्गत छूट 26–9–2014 को मिल गई है जो कि 2015–2016 से लागू है।

वैदिक अनुसन्धान समिति (पंजी.)

शृङ्गीऋषि बेवसाईट
Website : www.shringirishi.in
Email : www.contact@shringirishi.in

।। ओ३म् ।।

चरित्र और मानवीयता

जीते रहो !

देखो मुनिवरो ! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेद मन्त्रों का पठन–पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेदवाणी में उस महामना परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा अनन्तमयी हैं और वह प्रकाश स्वरूप हैं, वह अग्निमयी स्वरूप माने गये हैं। हमारा प्रत्येक वेद मन्त्र उस परमपिता परमात्मा के गुणों का वर्णन करता रहता है इसीलिए वह परमपिता परमात्मा सर्वत्र जगत में निहित हैं। और जितना भी यह जड़ जगत अथवा चैतन्य जगत हमें दृष्टिपात आ रहा है उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में प्रायः वह परमपिता परमात्मा दृष्टिपात आते रहते हैं। इसीलिए हमारे आचार्यों ने कहा है कि इस परमपिता परमात्मा की महिमा का यशोगान गाना चाहिए। प्रत्येक मानव अपनी स्थली पर विद्यमान होकर के उसकी चारों ओर महिमा है उसको अपने में निहारना चाहिए और उसी में संलग्न हो करके ध्यानावस्थित हो जाना चाहिए। हमारा वेदों का एक–एक मन्त्र अपने में यशोगान गा रहा है, नाना प्रकार की विद्याओं का वर्णन कर रहा है।

प्राणों का मिलान

आज के हमारे वेद के पठन–पाठन में प्राणों का बड़ा महत्त्व आ रहा था। प्राणं ब्रव्हे चन्द्र वो रुद्राः आचार्यों ने कहा कि यह प्राण रुद्र हैं। जब ये शरीर से निकल जाते हैं ये संसार को रुला देते हैं तो इसलिए इनको रुद्र कहा जाता है। तो प्राणं ब्रह्म व्रते देवाः तो हमारे आचार्य, ऋषि मुनियों ने इन प्राणों के ऊपर बड़ा अनुसन्धान किया है। जैसे प्राण, अपान, उदान, समान और व्यान यह पांच प्राण

कहलाते हैं और **साधक जब अपनी साधना में प्रवेश होता है तो वह प्राण को अपान में प्रवेश करता है और अपान को व्यान में और व्यान को समान में और समान को उदान में ले करके वह चित्त का दर्शन करता है।** तो मानो देखो योगीजनों ने अपने में मानो इसको जानने का प्रयास किया। मेरी प्यारी माताओं ने पूर्व कालों में साहित्यिक चर्चाओं में आता रहा है क्या **प्राण और अपान को मिलान करके व्यान में प्रवेश करके मेरी प्यारी माताएं अपने गर्भ के शिशु से वार्ता प्रगट करती रही हैं।** मानो इस प्रकार प्राणों का अपना बड़ा एक विचित्र महत्त्व माना गया है। तो आज मैं बेटा ! देखो प्राणों के सम्बन्ध में कोई विशेष चर्चा नहीं केवल यह क्या प्राण अपने में मानो देखो महत्त्वदायक हैं। और प्राण को अपान में, अपान को व्यान में, व्यान को समान में और समान को उदान में प्रवेश करते हुए बेटा ! ऋषि–मुनि अपने जन्म जन्मान्तरों के संस्कारों को अपने चित्त मण्डल में दृष्टिपात करते रहे हैं। तो आज बेटा ! मैं योगियों के सम्बन्ध में नहीं जाना चाहता हूँ। केवल यह कि आज का हमारा जो वेद मन्त्र हमें उद्गीत गा रहा है अथवा जो प्रेरित कर रहा है उन वार्ताओं में तुम्हें मैं सूक्ष्म सा परिचय देने के लिए आया हूँ।

राष्ट्रवाद

परन्तु जहाँ प्राण के ऊपर ऋषि वृतियों में रत्त होने के लिए उन्होंने अपने उद्गीत गाया है वहाँ आज के वेद मन्त्रों में बेटा ! राष्ट्र की बड़ी महत्ता आ रही थी। राष्ट्र के ऊपर आचार्यों ने, वेद मन्त्रों ने अपने में बड़ा उद्गीत गाया है और यह कहा है कि राष्ट्र अपने में पवित्र होना चाहिए। राजा वह होता है जो जितेन्द्रिय होता है और जितेन्द्रिय जब राजा होता है तो प्रजा भी उसी के अनुसार बरतती रहती है। बाल्य–बालिका भी उसी के अनुसार बरतते रहते हैं तो संसार अपने में ऊर्ध्वा में उड़ाने उड़ने लगता है। तो विचार आता रहता है कि राष्ट्रम् ब्रह्मा व्रतम् देवत्वाम् राष्ट्राः तो राष्ट्र के ऊपर बड़ी विचित्र चर्चाएँ आ रही थीं। तो बेटा ! देखो राष्ट्र को अपने में ऊँचा बनना चाहिए। तो जहाँ राष्ट्र की चर्चाएँ आती हैं, जहाँ साधकों की चर्चाएँ वैदिक साहित्य में आती रही हैं वहाँ मानव के जीवन को

ऊँचा बनाने के लिए नाना प्रकार की हमें प्रेरणाएँ प्राप्त होती रही हैं। तो आओ मेरे प्यारे ! इस सम्बन्ध में मैं विशेष चर्चा न करता हुआ केवल आज मैं तुम्हें राष्ट्रवाद के ऊपर कुछ चर्चाएँ देना चाहता हूँ। आओ, आज मैं तुम्हें त्रेता के काल में ले जाना चाहता हूँ जहाँ बेटा ! देखो विद्यालयों में विराजमान हो करके राजा इत्यादि देखो अपने–अपने विचार विनिमय करते रहे हैं।

गुरुत्व क्या है

मुझे वह काल स्मरण आता रहता है जिस काल में बेटा ! देखो राजा रावण के यहाँ नाना प्रकार की विज्ञानशालाएँ रही हैं और उन विज्ञानशालाओं में समय–समय पर मानो उनकी गोष्टियाँ होती रहीं और विचार विनिमय होता रहता था। एक–एक परमाणु के ऊपर, अणुओं के ऊपर उनका विचार–विनिमय होता रहा है। मेरे प्यारे ! देखो एक समय राजा रावण के यहाँ एक विज्ञान भवन में विचार विनिमय होने लगा जिसमें बेटा ! देखो उनके विधाता कुम्भकरण और महर्षि भारद्वाज मुनि के आश्रम में जो मानो विज्ञानवेत्ता थे ब्रह्मचारी सुकेता और ब्रह्मचारी कवन्धि और गार्हपत्य ये सब वैज्ञानिक मानो देखो सभा में विद्यमान थे। और भी नाना ऋषि–मुनियों का मानो देखो विचार–विनिमय हो रहा था। तो एक परमाणु के ऊपर विचार विनिमय प्रारम्भ होने लगा क्या यह गुरुत्व क्या है। तो गुरुत्व के ऊपर विचार–विनिमय करके बेटा ! देखो उन्होंने, किसी ने कहा यह गुरुत्व ही पिण्ड का निर्माण करता है परन्तु इतने में देखो वह नरायन्तक ने कहा, रावण के पुत्र ने क्या पिण्ड जब ही बनता है जब तरलत्व का इसमें मिश्रण होता है परन्तु देखो केवल ये गुरुत्व इकला क्या करता है। परन्तु इसके ऊपर और विचार–विनिमय हुआ। परन्तु इतने में देखो ब्रह्मचारी कवन्धि ने कहा और सुकेता ने अमृतम ब्रव्हे क्रतम देवत्वाम् वेद का वाक् उच्चारण करके उन्होंने कहा क्या यह अपने में यथार्थ है। परन्तु जब तक देखो गुरुत्व, तरलत्व में तेजोमयी का मिश्रण नहीं होता जब तक पिण्डों का निर्माण नहीं होता। जैसे माता के गर्भस्थल में पिण्डों का निर्माण होता है–शिशु, वह शिशु अमृतम मानो देखो पिण्ड का निर्माण हो जाता है। **यह मानव एक पिण्ड के**

रूप में है। इसी प्रकार जब परमात्मा इस संसार का सृजन करता है तो यह नाना प्रकार के लोक लोकान्तरों के पिण्ड के रूप में प्रायः यह दृष्टिपात आता रहता है। तो इस प्रकार मुनिवरो ! देखो उनका विचार–विनिमय हो रहा था परन्तु अन्तिम चरण यह हुआ कि अपने में निपटारा नहीं हो सका। प्रातःकाल से सायँकाल हो गया और सायँकाल तक उनके यहाँ जब कोई निपटारा नहीं हो सका तो मेरे प्यारे ! देखो राजा रावण का मन मस्तिष्क अशान्त हो गया। अशान्त हो जाने के पश्चात् सायँकाल को अपने–अपने कक्ष में सब जा पहुँचे। राजा रावण भी अपने कक्ष में जा पहुँचा।

मानव को ब्रह्मवेत्ताओं का आश्रय चाहिये

परन्तु देखो विचार विनिमय करने लगे कि अमृतम ब्रहे क्रणम दम ब्रव्हा अस्सुतम देवत्वाम् लोकाः क्या मैं अपने में क्या कर सकता हूँ। परन्तु देखो विचार विनिमय करते बेटा ! रात्रि समय निन्द्रा में नहीं तल्लीन हुए। निन्द्रा न आने का कारण केवल देखो चिन्तन में लग गये, प्रातःकाल हो गया। प्रातःकाल के अन्तिम चरण में यह विचार आया क्या मेरे मन मस्तिष्क में जो अशान्ति आ गई है मैं इसमें सान्त्वना को प्राप्त करने के लिए किसी ब्रह्मवेत्ता का आश्रय चाहिए। क्योंकि बिना ब्रह्मवेत्ता के मानव को देखो मन मस्तिष्क में शान्ति की स्थापना नहीं होती। जब तक हम ब्रह्म का विचार विनिमय नहीं करेंगे–जब तक प्राण को अपान में, अपान को व्यान में नहीं ले जायें तो मानो देखो मानव के मन मस्तिष्क में शान्ति की स्थापना नहीं होती। तो राजा रावण ने अपने मंत्रीगणों को निमन्त्रित किया। प्रातः काल में जब मंत्रीगणों का आगमन हुआ उन्होंने कहा हे मंत्रीगणों तुम इस राष्ट्र को ऊर्ध्वा में ले जाना और मैं देखो किसी महापुरुष के दर्शन करने भयँकर वनों में जाऊँगा और उनके यहाँ मैं अपना विचार विनिमय करूँगा, मेरा मन मस्तिष्क अशान्त हो गया है। उन्होंने कहा बहुत प्रियतम। मेरे प्यारे ! देखो मंत्रियों ने कहा जैसी प्रभु आपकी इच्छा हो वैसा ही आप भ्रमण और ऋषि मुनियों का आप दर्शन कीजिए।

राजा रावण का शान्ति के लिए गमन

मेरे प्यारे ! मुझे ऐसा स्मरण आ रहा है कि राजा रावण अपने

वाहन में विद्यमान हो करके और वहाँ से उन्होंने प्रस्थान किया। भ्रमण करते हुए मुनिवरो ! देखो भयँकर वनों में महर्षि पारेत्वर मुनि महाराज का स्थान उन्हें प्राप्त हुआ। पारेत्वर ऋषि ने उनका स्वागत किया, कुछ आत्म चर्चाएँ हुईं परन्तु उनकी आत्मा में शान्ति की स्थापना नहीं हुई। वहाँ से भी उन्होंने प्रस्थान किया तो महर्षि श्वेतकेतु के द्वार पर पहुँचे। महात्मा श्वेतकेतु ने कहा आईये भगवन् और उनका स्वागत किया। उनका विचार विनिमय होने लगा परन्तु विचार विनिमय होते उनके ह्रदय में भी कोई शान्ति, मन मस्तिष्क में शान्ति न आने से वहाँ से भी उन्होंने गमन किया।

महात्मा कुक्कुट मुनि के आश्रम में आगमन

भ्रमण करते हुए मुनिवरो ! देखो वह महात्मा कुक्कुट मुनि के द्वार पर पहुँचे। महात्मा कुक्कुट मुनि महाराज ने उनका स्वागत किया और सायँकाल का समय हो गया था। उन्होंने बेटा ! उनके आश्रम में जो कन्दमूल इत्यादि थे वह उन्हें प्रदान किए। वह अपने में तृप्त हो गये और तृप्त हो जाने के पश्चात् उन्होंने कहा कहो रावण, आज आपका मन मस्तिष्क मुझे अशान्त प्रतीत हो रहा है? उन्होंने कहा प्रभु ! मेरा मन मस्तिष्क अशान्त है। उन्होंने कहा कारण? कि कारण यह कि देखो इससे पूर्व काल में मेरे विज्ञान भवन में एक सभा हुई है वैज्ञानिकों की और वैज्ञानिकों में गुरुत्व परमाणु के ऊपर विचार विनिमय हो रहा था परन्तु अपने में कोई निपटारा नहीं हो सका। तो मेरा मन, मस्तिष्क अशान्त हो गया। हे प्रभु ! मैं अपने में शान्ति की स्थापना के लिए आपके चरणों की वन्दना में समर्पित हुआ हूँ। हे प्रभु ! मेरा मन, मस्तिष्क शान्त होना चाहिए।

मेरे प्यारे ! देखो महर्षि कुक्कुट मुनि महाराज वायु गोत्रीय थे और महर्षि वायु मुनि महाराज के वो साढ़े तीन हजार वे पड़पौत्र कहलाते थे। तो उनसे विचार विनिमय होने लगा। महात्मा कुक्कुट ने कहा रावण तुम्हें आचार्यों ने जो कुछ अब तक उद्गीत गाया उसे उच्चारण कीजिए क्या (कि) आचार्यों ने, गुरुओं ने तुम्हें क्या उपदेश दिया है अब तक। तो मेरे प्यारे ! उन्होंने कहा प्रभु ! मुझे उपदेश तो सर्वत्र दिया है परन्तु (और) जागृत, स्वप्न, सुषुप्ति का भी उपदेश

दिया है परन्तु वह मुझे स्मरण नहीं रहा है। मैं मानो देखो राष्ट्रीय वृतियों में रत्त हो करके मेरे से वह विचार ओझल हो गये हैं। उन्होंने कहा धन्य है।

महात्मा कुक्कुट मुनि और राजा रावण का विचार विनिमय

महात्मा कुक्कुट मुनि महाराज और राजा रावण दोनों का विचार विनिमय होने लगा और विचार विनिमय होते उन्होंने कहा हे रावण आत्मा का जो सम्बन्ध है वह मानो अपने में चेतना कहलाती है और मन उसी के आश्रित हो करके चेतनित रहता है। मेरे प्यारे ! देखो महात्मा कुक्कुट ने कहा मनम् ब्रह्मे, मनस्तत्त्व ब्रव्हा क्रतम देवाः यह जो मन है इसका शान्तम् ब्रव्हे यही तो आत्मा के प्रकाश में जब रमण करता है तो मानो देखो जब नेत्रों के साथ में जागरूक सुषुस्ति से अमृतम क्योंकि मानव के शरीर की यह देखो चार प्रकार की अवस्थाएँ कहलाती हैं। सबसे प्रथम अवस्था का नाम उन्होंने वर्णन करते हुए कहा सबसे प्रथम जागरूक है, स्वप्न और सुषुप्ति और एक त्रिया के रूप में वर्णित रहती है।

जाग्रत–अवस्था

मानो देखो सबसे प्रथम जागरूक है। जब यह मन नेत्रों के साथ होता है प्राण की प्रतिक्रिया को ले करके तो नेत्र मानो देखो नेत्र और मन दोनों दृष्टिपात करते रहे हैं, संसार का विभाजन करते रहते हैं–यह विभक्तता में परणित करता रहता है। एक पंक्ति लगी उसमें माता है, भौजई है, उसी में पत्नी है, और पुत्री है सर्वत्र मानो देखो एक पंक्ति लगी हुई है। मन देखो इनका विभाजन करता रहता है ये मेरी माँ है, यह माँ है, ये पुत्री है, ये पत्नी है, ये विभाजन कौन कर रहा है? बेटा ! यह आत्मा के प्रकाश में मानो देखो मन नेत्रों के साथ में गमन करता हुआ यह विभक्त क्रिया में लगा हुआ विभाजन करता रहता है। राष्ट्रवादों का भी विभाजन करता रहता है। तो यह विभक्त क्रिया में लगा हुआ है। तो मेरे प्यारे ! उन्होंने कहा इसका नाम जाग्रत अवस्था कहा जाता है। **शरीर की अवस्था का नाम जागरूकता है** और जाग्रत में देखो मन और नेत्र दोनों का समन्वय होता है और मन प्राणों की पुट लग करके मानो देखो

गतिवान होता रहता है। **तो यह गतियों में रमण करने वाला मानो देखो यह मनस्तत्त्व कहलाया गया है।**

स्वप्न–अवस्था

मेरे प्यारे ! देखो आगे उन्होंने कहा कि दूसरी अवस्था का नाम स्वप्न कहा जाता है। यह जो स्वप्न है क्योंकि मानव के, मानव के शरीर में मुनिवरो ! देखो नद–नदियाँ नहीं होती परन्तु यह मन आत्मा के प्रकाश में रत्त हो करके मुनिवरो ! देखो यह नद–नदियों का निर्माण कर लेता है, शरीर में पत्नी नहीं होती पत्नियों का निर्माण हो जाता है, पति नहीं होते, पतियों का निर्माण हो जाता है। मेरे प्यारे ! देखो राष्ट्र नहीं होते राष्ट्रों का निर्माण कर लेता है। मेरे पुत्रो ! देखो यह निर्माण में लगा रहता है–कहीं समुद्रों का निर्माण कर रहा है। परन्तु देखो वह **जो चित्त में अंकुर सूक्ष्म रूप से विद्यमान हैं उन अंकुरों को, संस्कारों को यह साकार रूप में भोग लेता है आत्मा के प्रकाश में** उसका नाम स्वप्न अवस्था कहा जाता है। स्वप्नम ब्रह्म वर्ण देवत्वाम् परन्तु देखो यह अमृतम अवृति देवत्वाम्–शरीर में बेटा ! देखो योगाभ्यास करता है कहीं मानो देखो द्रव्यपति से द्रव्यपति बन जाता है, कहीं द्रव्यपति से द्रव्यहीनता को प्राप्त हो जाता है। मेरे प्यारे ! यह नवीन जगत का निर्माण करता रहता है, भोगतव्य में प्रवेश कर जाता है। तो मुनिवरो ! देखो उस अवस्था का नाम ही मानो स्वप्न कहा जाता है। परन्तु यह आत्मा के प्रकाश में यह मन प्रकृति का सूक्ष्म तन्तु होने से मेरे पुत्रों ! देखो उसी के प्रकाश में यह संस्कारों को भोगता रहता है क्योंकि संस्कार प्रकृति के मण्डल में निहित रहते हैं, यही संस्कार चित्त के मण्डल में प्रवेश करते रहते हैं। तो मेरे प्यारे ! देखो उस अवस्था का नाम स्वप्न कहा जाता है।

सुषुप्ति–अवस्था

जब मुनिवरो ! देखो यह मन–बुद्धि–चित्त और अहंकार अपनी साम्यावस्था में प्रवेश होकर के जब यह मन शान्त हो जाता है, इन्द्रियाँ भी शान्त हो जाती हैं तो यह इसको सुषुप्ति कहा जाता है। सुषुप्ति उसे कहते हैं जहाँ मानव यह कहता है कि आज मैं ऐसी

निद्रा में तल्लीन हो गया क्या मुझे संसार का कोई भान नहीं रहा है। मैं ऐसा अचेता में चला गया। तो विचार आता है कि यह मन अपनी स्वप्नावस्था को प्राप्त हो गया है। मेरे प्यारे ! देखो मन बुद्धि में और बुद्धि चित्त में और चित्त अहंकार में प्रवेश करके बेटा ! यह सुषुप्ति उसे ही कहा जाता है।

विचार आता है कि मुनिवरो ! अमृतम ब्रह्म देवत्वाम् यह मन है जब यह मन प्रकृति का सूक्ष्म तन्तु होने से जब यह और सूक्ष्मता में जाता है तो बेटा ! देखो चार प्रकार की बुद्धियों का निर्माण होता है। सबसे प्रथम बुद्धि है, बुद्धि के पश्चात् मेधा, ऋतम्भरा और प्रज्ञावी कहलाता है जिसमें **परमात्मा का दर्शन करता है–प्रज्ञावी में।** मेरे प्यारे ! **ऋतम्भरा में ज्ञान करके मौन हो जाता है** और प्रज्ञाम भूतम ब्रहे और अव्रतम देखो मेधाम भूतम ब्रह्मा वर्णस्सुते देवत्वाः–वेद का वाक् कहता है जब मुनिवरो ! यह बुद्धि से मानावृति को रत्त होता है तो बुद्धि दृष्टिपात करती है। जब यह प्रज्ञा में प्रवेश करता है तो मुनिवरो ! देखो यह **मेधावी बन करके संसार का निर्माण करता है।** नाना प्रकार के यन्त्रों में प्रवेश कर जाता है और ऋतम्भरा में जा करके मौन हो करके प्रज्ञा में वह प्रभु चेतना में प्रवेश कर जाता है। तो उन्होंने कहा हे वर्णनं ब्रह्मा, हे रावण इसी का नाम सुषुप्ति कहा जाता है।

त्रिया–अवस्था

परन्तु जब देखो यह मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार जब एक दूसरे में लय हो करके और आत्मा का अमृतम देखो मन इसमें लय हो जाता है तो उस समय प्राणाम् आत्माम् भूतप प्रव्हे जागाः स्वप्तम देवत्वाम्। मेरे प्यारे ! उस समय देखो यह प्राण आत्मा के साथ में ही मानो देखो श्वांस की गतियाँ प्रारम्भ होती रहती हैं परन्तु देखो अमृताम ब्रह्मे देवत्वाम् और जब ये मन अपने में रत्त हो करके बेटा ! मन और प्राण का जब दोनों का संयोग होता है, दोनों का मिलान हो जाता है तो उसी का नाम बेटा ! त्रिया अवस्था में परणित हो जाना है। जब तक मन और प्राण का दोनों का संयोग नहीं होता, दोनों का मिलान नहीं होता तब तक मुनिवरो ! देखो यह मानव अपनी

मानो शान्त अवस्था को प्राप्त नहीं होता। यह मानो देखो ब्रह्मणम् ब्रव्हा क्रतम यह अपने में त्रिया तक को प्राप्त नहीं हो सकेगा। तो मेरे प्यारे ! देखो इसलिए मन और प्राण दोनों का मिलान करते हुए मानव प्रयत्न करता रहा है।

मोक्ष की पगडण्डी

आचार्यजनों ने नाना प्रकार के प्राणायाम–कहीं खेचरी मुद्रा में चला जाता है, कहीं मेरे प्यारे ! देखो यही रेचक और कुम्भक में प्रवेश कर जाता है। नाना प्रकार के प्राणों को अपने में संयोग से लाता रहता है और प्राण और मन का दोनों का ही मिलान करता हुआ मुनिवरो ! देखो अपने में परणित होता रहा है। तो मन और प्राण का दोनों का संयोग और दोनों का मिलान हो जाता है तो वही मुनिवरो ! देखो एक पगडंडी है, उसे मोक्षाम, भूतम प्रव्हाणम ब्रहे–वह मोक्ष को जाने की एक पगडंडी मानी गयी है। तो मेरे प्यारे ! देखो जब ऋषि ने इस प्रकार का उपदेश दिया और उपदेश देते हुए मुनिवरो ! देखो विचार विनिमय करते उन्हें सायँकाल से प्रातःकाल हो गया। प्रातःकाल हो गया तो राजा रावण के अन्तर्हृदय में आत्म शान्ति की स्थापना हुई।

शोभनी ऋषि

उन्होंने कहा हे रावण मेरे महापिता थे। एक मानो मेरे सातवें महापिता का नाम शौभनी ऋषि था और शौभनी ऋषि ने एक समय यह विचारा वेद मन्त्रों का अध्ययन करते हुए क्या मैं अपने जन्म जन्मान्तरों के संस्कारों को उद्बुद्ध करना चाहता हूँ जो मेरे चित्त में विद्यमान हैं। क्योंकि वेद मन्त्र यह कहता है मोक्षाण् भूतम् ब्रह्मे मोक्षाम् चित्याम भूतमः संस्कारा विघ्यावृति देवत्वाम् ! तो मानो, उन्होंने वेद मन्त्रों में यह अध्ययन किया क्या (कि) **मोक्ष उसे कहते हैं जब चित्त में कोई संस्कार नहीं रहेगा।** जब देखो चित्त में कोई संस्कार नहीं रहेगा तो उसी का नाम, क्योंकि चित्त निरसंस्कारों से, संस्कारों से रहित हो जाने का नाम मोक्ष है। तो मेरे प्यारे ! वह परमानन्द की प्राप्ति कही जाती है। तो जब उन्होंने यह अपने में वर्णन किया तो

वर्णनांनम ब्रव्हे देवत्वाम् भूताम् भूतम् ब्रह्मा लोकाम्। तो मेरे प्यारे ! देखो जब ऋषि ने इस प्रकार अपना मन्तव्य दिया तो मेरे पूज्य आचार्य, मेरे पूज्यपाद महापिता मानो देखो वह पच्चासी वर्ष तक वह मौन हो गये और मौन हो करके उन्होंने विचारा कि मैं क्या ऐसा–ऐसा कौन–सा मैं यत्न कर सकता हूँ जो मोक्ष के संस्कार मेरे जागरूक हो जाए। उन्होंने बेटा ! कहीं वायु का सेवन करते थे प्राण के माध्यम से, कहीं मानो औषधियों का पान करते उन्होंने पच्चासी वर्ष तक मौन रह करके मेरे प्यारे ! देखो एक लाख पच्चासी हजार पांच सौ इक्कसठ जन्मों के संस्कारों को बेटा ! वह जागरूकता में ला सके। तो वेद का ऋषि कहता है हे रावण देखो इस प्रकार हमारे आचार्यों ने प्रयत्न किया है। प्राण का और मन का दोनों का सम्मिलान करने का प्रयास किया जिससे देखो हमारी अन्तरात्माएँ हमारे अन्तरात्मा का साक्षात्कार और चित्त में कोई संस्कार न रहे। जिससे हमारी चेतना में चेतना का हमें भास हो जाए। मेरे पुत्रो ! देखो मुझे स्मरण है जब राजा रावण अपने में शान्त हो गये। उन्होंने कहा धन्य है प्रभु ! आपने मुझे अन्धकार से प्रकाश में पहुँचाया है।

राजा रावण द्वारा लंका भ्रमण के लिए आग्रह

प्रभु, मेरी इच्छा यह है क्या आप को लंका में पधारे बहुत समय हो गये हैं, आप मेरी लँका का भी भ्रमण करें। मेरे प्यारे ! कुक्कुट मुनि ने कहा कि मुझे इतना समय नहीं है जो आज मैं तुम्हारी लँका का भ्रमण करूँ क्योंकि मैं परमात्मा के चिन्तन में ही सदैव रत्त रहता हूँ। उन्होंने कहा नहीं भगवन्। तो राजा रावण नम्र थे और ऋषियों का ह्रदय तो प्रायः उदार होता ही है। उन्होंने बेटा ! वहाँ से गमन किया और अपने वाहन में विद्यमान हो करके वह लँका में उनका आगमन हुआ।

महारानी मन्दोदरी और महात्मा कुक्कुट मुनि वार्ता

लँका में जब आगमन हुआ तो सबसे प्रथम राष्ट्र गृह में ऋषि का आगमन हुआ। महारानी मन्दोदरी ने उनका स्वागत किया और स्वागत किया और नाना प्रकार के पदार्थों का पान कराया। राजा

रावण ने कहा प्रभु आप अपनी ऊदर पूर्ति में लग जाइये, कुछ पदार्थों का पान कीजिए मैं मंत्रियों से वार्ता करके आपके समक्ष आता हूँ। मेरे पुत्रो ! देखो राजा रावण ने वहाँ से गमन किया और वह मंत्रियों में ही जा पहुँचे। परन्तु देवी ने उन्हें नाना प्रकार के पदार्थों का पान कराया और मन्दोदरी अपने देवर्षि से यह उच्चारण करने लगी हे प्रभु ! आप जब लँका से प्रस्थान करोगे तो मेरी पत्नि अम्रतम ब्रव्हा वेजदध्वाम् मेरे पति में कोई मानो दोषारोपण हो अथवा मेरे देवम् ब्रहा इसमें अभिमान की मात्रा हो तो कोई ऊँचा उपदेश देते जाना। मेरे प्यारे ! महात्मा कुक्कुट ने कहा देवी मैं प्रयत्नशील रहूँगा। मुनिवरो ! देखो, यह हमारे यहाँ एक परम्परागतों का एक नियम रहा है क्या कोई मेरी पुत्री यह नहीं चाहती कि मेरे पति में किसी प्रकार का अवगुण हो। सदैव यह चाहती है कि मेरे पति में मानो देखो सर्वत्र गुण होने चाहिए, ब्रह्मवेत्ता भी हो, ब्रह्मवर्चोसी भी हो और वह नाना प्रकार के गुणाधानम् गुणों को धारण करने वाला हो। सदैव मेरी पुत्रियों के ह्रदय में यह कामना परम्परा से रही है। तो यही कामना को ले करके महारानी मन्दोदरी ने अपने विचार व्यक्त किए। ऋषि बड़े प्रसन्न हुए। परन्तु यह विचार–विनिमय ही चल रहा था इतने में राजा रावण का आगमन हुआ। उन्होंने कहा आईये भगवन् मैं आपको अपनी लँका को भ्रमण कराता हूँ। उन्होंने कहा चलो। तो दोनों ने वहाँ से प्रस्थान किया।

महात्मा कुक्कुट मुनि का लँका में भ्रमण

भ्रमण करते हुए मुनिवरो ! सबसे प्रथम वह कुबेर भवन में ले गये। उन्होंने कहा, महाराज यह जो भवन है यह महाराजा कुबेर ने इसका निर्माण किया है। मानो देखो मेरे से पूर्व लँका का स्वामी महाराजा कुबेर था जिसका यह भवन है। और महाराजा कुबेर से पूर्व महाराजा महिदन्त यहाँ के राजा थे और महाराजा महिदन्त से पूर्व यहाँ के मानो देखो शिव राजा थे। और शिव से पूर्व यहाँ का राजा महाराजा विक्रम था और विक्रम राजा से पूर्व लँका का राजा स्वामी कात्यानी था। और कात्यानी से पूर्व लँका का स्वामी रेणकेतु था और रेणकेतु से पूर्व लँका का स्वामी मानकृति था। और मानकृति से पूर्व

लँका का स्वामी मान्धाता था और मान्धाता से पूर्व लँका का स्वामी कातवेतु था। और कातवेतु से पूर्व लँका का स्वामी यशोधरमा था और यशोधरमा से पूर्व लँका का स्वामी मैनकृति था। मैनकृति राजा से पूर्व लँका का स्वामी सोमभानु था और सोमभानु से पूर्व लँका का स्वामी नारायणवृति था। और नारायणवृति से पूर्व लँका का स्वामी स्वाभावु था और स्वाभवु से पूर्व लँका का स्वामी मैनमृति था। तो बेटा ! मैं लँका का वंशलज वर्णन करने नहीं आया हूँ। विचार विनिमय केवल यह क्या राजा रावण ने बेटा ! देखो ऋषि को नाना भवनों का निरीक्षण कराया। उन्होंने कहा प्रभु यह कुबेर भवन है और यह जो भवन आपको मैं दृष्टिपात करा रहा हूँ इसका निर्माण महाराजा शिव ने किया था। यह स्वर्ण का भवन है। तो मुनिवरो ! देखो वह बड़े प्रसन्न हुए। ऋषि ने कहा रावण मुझे यह प्रतीत नहीं था क्या तुम्हारा यह लँका इतना महान है, इतना मानो उज्ज्वलशील है और अपने में मानो अद्वितीय है। जब ऋषि ने इस प्रकार वर्णन किया तो उन्होंने कहा आओ भगवन् वह उसके पश्चात् विज्ञान भवन में ले गये। तो जहाँ मुनिवरो ! देखो पृथ्वी के ऊपर अनुसन्धान हो रहा था। उन्होंने कहा प्रभु यह मेरे यहाँ विज्ञान है, विज्ञानशालाएँ हैं–पृथ्वी विज्ञानशाला यहाँ पृथ्वी के ऊपर अनुसन्धान हो रहा है यह मानो देखो प्रथाम भवम् ब्रह्मे देवत्वाम्। मेरे प्यारे ! उन्होंने कहा देखो भगवन् देखो यह नाना वैज्ञानिक पृथ्वीयों के ऊपर अनुसन्धान कर रहे हैं–पृथ्वी में कितना परमाणु कितनी दूरी पर, कौन–सा खनिज कितनी दूरी पर है। कौन–सा खाद्य कैसे उत्पन्न होता है और कैसे यह बलवती हो सकता है। तो इसके ऊपर विचार–विनिमय कर रहे हैं। उन्होंने कहा धन्य है। उन्होंने कहा यह द्वितीय विज्ञानशाला है जो आपोमयी मानो देखो जल के ऊपर अनुसन्धान हो रहा है या आपाम् भूतम् ब्रह्मा यह आप ही तो जीवन है। आप ही मानो देखो प्राणों का देने वाला है इसके ऊपर वैज्ञानिक अपने में अनुसन्धान कर रहे हैं। उन्होंने कहा धन्य है राजन, तुम्हारा राष्ट्र बड़ा उन्नत है। उन्होंने कहा प्रभु यह मेरे यहाँ सूर्य अनुसन्धानशाला है। यहाँ सूर्य के ऊपर अनुसन्धान और सूर्य की ऊर्ज्वा के साथ में यन्त्र भ्रमण कर रहे हैं। एक यन्त्र का यहाँ निर्माण हुआ है जो सूर्य की किरणों से वो गमन करता रहता

है उसकी ऊर्ज्वा से यह मानो सूर्य की परिक्रमा कर रहा है। कोई यन्त्र पृथ्वी की परिक्रमा कर रहा है, कोई ध्रुव की परिक्रमा कर रहा है। यह नाना प्रकार के वैज्ञानिक यन्त्रों का निर्माण कर करके उनका वायु कफ दे करके भ्रमण करा रही है। उन्होंने कहा धन्य है। यह चन्द्रशाला है, यहाँ चन्द्रमा के ऊपर अनुसन्धान होता रहता है। यह चन्द्रमा कितना सोम लेता है समुद्रों से और सोम की कैसे वृष्टि करता है इसके ऊपर विचार–विनिमय करते रहते हैं। यन्त्रों का निर्माण करते रहते हैं और चन्द्रमा में गति कैसे होती है।

नरायन्तक का विज्ञान

मेरे प्यारे ! देखो वह नरायन्तक के द्वार पर ले गये, यह मेरा पुत्र है नरायन्तक, यह यन्त्रों में गमन करते रहते हैं। मेरे प्यारे ! देखो उन्होंने कहा क्या तुम चन्द्र यात्री हो? उन्होंने कहा महाराज कहीं भ्रमण कर आता हूँ। उन्होंने कहा कितनी गति है तुम्हारी जाने की? उन्होंने कहा कि मैं **एक रात्रि और एक दिवस मेरे लिए पर्याप्त हैं, मैं चन्द्रमा में प्रवेश कर जाता हूँ।** मैं, चन्द्रमा में मेरा गमन हो जाता है वहाँ के वैज्ञानिकों से मैं वार्ता प्रगट करके चला आता हूँ। उन्होंने कहा और तुम्हारी कितनी गति है? उन्होंने कहा मेरे जो आचार्य हैं वह महर्षि भारद्वाज रहे हैं और भारद्वाज की विज्ञानशाला में मैंने विज्ञान की शिक्षा को प्राप्त किया है। मैंने ऐसे–ऐसे यन्त्रों का निर्माण किया–एक यन्त्र में विद्यमान होता हुआ यहाँ से जो यन्त्र उड़ाने उड़ता है तो यहाँ से उड़ान उड़ता हूँ तो सबसे प्रथम चन्द्रमा में। चन्द्रमा से उड़ान उड़ी तो बुध में और बुध से उड़ान उड़ी तो शुक्र में और शुक्र से उड़ान उड़ी तो मानो देखो मंगल में। और मंगल से उड़ान उड़ी तो मानो देखो मृचिका मण्डल में, मृचिका मण्डल से उड़ान उड़ी तो मेृतकेतु मण्डल में, मेृतकेतु मण्डल से उड़ान उड़ी तो अरून्धति में, अरून्धति मण्डल से उड़ान उड़ी तो वशिष्ठ मण्डल में और वशिष्ठ मण्डल से उड़ान उड़ी तो मैं मानो देखो स्वाति नक्षत्र में चला जाता हूँ। और स्वाति नक्षत्र से उड़ान उड़ता हुआ मूल नक्षत्र में चला जाता हूँ और मूल नक्षत्र से उड़ान हुआ मैं मौन अवृतिओं मण्डलों में प्रवेश कर जाता हूँ। तो उन्होंने कहा, नरायन्तक ने, भगवन्

मैं बहत्तर लोकों का भ्रमण करके मेरा यान मेरी विज्ञानशाला में पुनः प्रवेश कर जाता है। मेरे प्यारे ! देखो उन्होंने कहा धन्य है। अमृतम् ब्रह्मा लेवोस्सुति वह अपने में मौन हो गये। राजा रावण ने कहा प्रभु यह मेरे यहाँ विज्ञानशालाएँ हैं। नाना प्रकार के अस्त्रों–शस्त्रों का निर्माण होता रहता है। यहाँ आग्नेय अस्त्र और देखो ब्रह्मास्त्रों का प्रायः निर्माण होता रहता है। यह विज्ञानशालाएँ हैं।

अश्विनी कुमार की आयुर्वेद में गति

मेरे प्यारे ! देखो वहाँ से भ्रमण करते हुए वह चिकित्साला में पहुँचे जहाँ मुनिवरो ! देखो महात्मा भुंजु के दोनों पुत्र अश्विनी कुमार देखो इसके ऊपर अन्वेषण करते सुकेन वैद्य भी देखो उनके मध्य में विद्यमान थे। उन्होंने चर्चाएँ प्रगट कीं कि तुम्हारी इस आयुर्वेद में कितनी गति है? उन्होंने कहा प्रभु हम मानव के मस्तिष्क को, कण्ठ से ऊपरले भाग को भी हम दूरी कर देते हैं उसे पुनः गति दे देते हैं और मानव के हृदय को, हृदय को निकास करके और शरीर से पृथक करके औषधियों में दोनों को निहित कर देते हैं और छः माह के पश्चात् पुनः उसमें गति प्रदान कर देते हैं। मानो देखो इस प्रकार का हमारा यह चिकित्सालाएं हैं। चिकित्सालाओं में और भी नाना प्रकार का अन्वेषण होता रहता है। कहीं मानो इस प्रकार की बुटियाँ हैं जिनको पान करके मानव देखो भिन्न–भिन्न प्राणियों की भाषा को जानने लगते हैं। तो इस प्रकार मुनिवरो ! देखो उन्होंने जब दृष्टिपात कराया तो ऋषि बड़े प्रसन्न हुए।

मार्गशालाएँ

प्रसन्न चित हो करके उसके पश्चात् भ्रमण करते बेटा ! मार्गशालाओं के जो विशेषज्ञ थे, जहाँ मार्गों के निर्माण हो रहे थे, मार्गो में मानो देखो ऊर्ध्वा में मार्ग थे। उन्होंने कहा प्रभु यह मार्गशालाएं हैं यहाँ देखो मार्ग के विशेषज्ञ हैं और यहाँ निर्माण होता रहता है।

महर्षि कुक्कुट मुनि का उद्‌बोधन

मेरे प्यारे ! देखो सर्वत्र लँका का भ्रमण कराने के पश्चात् राजा रावण ऋषि के चरणों में ओत–प्रोत हो करके बोले हे प्रवम ब्रह्मे, हे

भगवन् मैं यह जानना चाहता हूँ आपको मेरी लँका कैसी प्रतीत हुई? उन्होंने कहा रावण तुम्हारा राष्ट्र तो बड़ा पवित्र है, मानो तुम्हारा तो विकासवादी राष्ट्र है। राजन् तुम्हें धन्य है परन्तु देखो मुझे सर्वत्र लँका को भ्रमण करने के पश्चात् मुझे ऐसा प्रतीत हुआ है जैसे तुम्हारी लँका में अग्नि प्रदीप्त होने वाली है। मेरे पुत्रो ! देखो जब यह कहा तो रावण ने नत–मस्तिष्क हो करके कहा प्रभु ! आपने ऐसा क्यों कहा? उन्होंने कहा मैंने इसलिए कहा है अमृतम व्रते देवत्वाम् मानो देखो तुमने मुझे ऊँचे–ऊँचे भवनों का दर्शन कराया है, स्वर्ण के भवनों का दर्शन कराया है। तुमने मानो देखो जल अनुसन्धानशाला, पृथ्वी अनुसन्धानशालाएं, सूर्य अनुसन्धानशाला, चन्द्र अनुसन्धानशालाएं, लोक लोकान्तरों में जाने वाले यात्री यन्त्र विद्यमान हैं परन्तु (और) नाना प्रकार की चिकित्सालाएं हैं और मार्ग शालाएं हैं। हे रावण तुमने मुझे सब कुछ दृष्टिपात कराया परन्तु तुमने मुझे कोई चरित्रशाला का दर्शन नहीं कराया है। और जिस राजा के राष्ट्र में चरित्र नहीं होता उस राजा का राष्ट्र आज नहीं तो कल अवश्य देखो अग्नि का काण्ड बन करके रहेगा। तो मेरे प्यारे ! देखो राजा रावण नत–मस्तिष्क हो गये और उन्होंने कहा प्रभु वास्तव में मैं विज्ञान में लगा रहा हूँ, विद्या में लगा रहा हूँ, परन्तु देखो चरित्र का वास्तव में अभाव है। तो मेरे प्यारे ! देखो उन्होंने कहा रावण तुम्हें प्रतीत है जिस समय तुम्हारा राज्याभिषेक हुआ था उस समय देखो महात्मा पुलस्त्य ऋषि महाराज ने मुझे सभापति बनाया और सभापति बना करके यह कहा कि तुम इसका राज्याभिषेक करो। मैंने तुम्हारे मस्तिष्क का अध्ययन किया और मस्तिष्क को अध्ययन करके ये कहा पुलस्त्य से ये राष्ट्र को चरित्र नहीं दे सकेगा, यह राष्ट्र को विज्ञान दे सकेगा, भवन दे सकेगा, विज्ञान में पहुँचा देगा, लोक लोकान्तरों का यात्री बना सकता है परन्तु ये चरित्र नहीं दे सकता इसलिए मैं इसका राज्याभिषेक नहीं करूँगा। तो तुम्हें प्रतीत है कि महात्मा भुञ्जु ने तुम्हारा राज्याभिषेक किया था। मेरे प्यारे ! देखो इतना उच्चारण करते हुए महात्मा कुक्कुट मुनि महाराज ने नतमस्तकम् ब्रह्मे वर्णा अच्छा अब राजन् मुझे आज्ञा दो, मैं अपने आश्रम में गमन करूँगा। मेरे प्यारे ! उन्होंने कहा धन्य

है प्रभु ! तो मुनिवरो ! देखो सर्वत्र लँका का भ्रमण करने के पश्चात् वह अपने आश्रम चले गये।

विचारों का अभिप्रायः यह कि मुनिवरो ! देखो हमारे यहाँ वैदिक साहित्य में राष्ट्र का अपना बड़ा महत्त्व माना गया है परन्तु राष्ट्र बिना चरित्र के ऊँचा नहीं बनता। गृह बिना चरित्र के ऊँचे नहीं बनते। विद्यालयों में जब चरित्र होता है, मानवीयता होती है तो विद्यालय ऊँचे बनते हैं। विचार विनिमय देने का हमारा अभिप्राय ये क्या मुनिवरो ! देखो राष्ट्र अपने में महान है परन्तु यदि उसमें चरित्र, उसमें मानवता हो तो। मुनिवरो ! देखो यह वेद का मन्त्र कहता है। वेद का मन्त्र कहता है राष्ट्रम् ब्रव्हे राष्ट्रम् ब्रव्हे क्रतम देवाः–हे राजा तू अपने में जितेन्द्रिय बन और जितेन्द्रिय बन करके तू अपने राष्ट्र को ऊँचा बना। तो मेरे प्यारे ! आज का हमारा अभिप्रायः क्या है–आज वेद मन्त्रों को तो मैंने इतना उद्‌गीत रूप में नहीं गाया तुम्हें बेटा ! मैं साहित्यिक विवेचना में ले गया कि हमारा इतिहास, साहित्य अपने में क्या पुकार रहा है। **मेरे पुत्रो ! देखो हमारे यहाँ चरित्र और मानवीयता होनी चाहिए।**

यह है बेटा ! आज का वाक्। **आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्राय ये कि हम परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाते हुए उसको निहारते रहें, अपने में मानो धारण करते रहें और धारण करके उसको अपने मन मस्तिष्क में सांत्वना को देते अपने जीवन को ऊँचा बनाए।** यह है बेटा ! आज का वाक्। अब मुझे समय मिलेगा मैं तुम्हें शेष चर्चाएं कल प्रगट करूँगा। आज का वाक् समाप्त, अब वेदों का पठन–पाठन होगा। अब वेद मन्त्रों का पठन पाठन।

ओ३म् देवाऽम् आपभ्याम् मनुगायनत्वाहा आपाइदमं माऽम् गायनत्वाहा आपा रथप् प्राणाः आपभ्याम् देवाऽम्।

ओ३म् यश्शचम्ं प्राययशो आपभ्याम् देवाऽम्।।

दिनाँक : 8 अगस्त, 1992

स्थान : विद्या मन्दिर, यमुना नगर

।। ओ३म् ।।

ब्रह्मयाग

जीते रहो!

देखो मुनिवरो ! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेद मन्त्रों का पठन पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वह परमपिता परमात्मा महिमावादी हैं और उसका जितना भी यह जड़ जगत अथवा चैतन्य जगत हमें दृष्टिपात आ रहा है उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में प्रायः वह परमपिता परमात्मा दृष्टिपात आते रहते हैं। क्योंकि वह अनन्तमयी हैं और उसका ज्ञान और विज्ञान भी अनन्तमयी प्रायः मानवीयता में परणित रहने वाला है तो वह परमपिता परमात्मा यज्ञोमयी स्वरूप हैं। और याग उसका आयतन है, उसका गृह है, उसका सदन है और वह प्रायः उसी में वास कर रहा है। तो इसलिए हमारा प्रत्येक वेद मन्त्रः उस परमपिता परमात्मा की गाथा गा रहा है और उसका वर्णन कर रहा है। प्रत्येक वेद मन्त्र में उस महान देव की महिमा अथवा उसके गुणों का गुणवादन कर रहा है। तो हम उस परमपिता परमात्मा की महिमा को जाने और उसका जो अनन्तमयी ब्रह्माण्ड है उसके ऊपर मानव को विचार-विनिमय करना चाहिए। परम्परागतों से ही मानवीयत्व अपने में अनुसन्धान करता रहा है और कोई **संसार की ऐसी वस्तु नहीं, परमात्मा का कोई भी ऐसा चयन नहीं जिसके ऊपर ऋषि-मुनियों ने विचार-विनिमय न किया हो** क्योंकि वे अपने में ही अपनेपन का ही व्यवधान करते रहे हैं। विज्ञान के ऊपर जब मानव चला गया तो ऋषि-मुनियों ने बेटा ! अपने को और ब्रह्माण्ड

को मापने का प्रयास किया और ब्रह्माण्ड और अपने को मापते हुए उन्होंने दोनों प्रकार के ज्ञान और विज्ञान को जानने का प्रयास किया।

ऋषि मुनियों का ज्ञान, विज्ञान

मुझे वह काल स्मरण आता रहता है जिस काल में बेटा ! देखो शिकामकेतु उद्दालक के यहाँ नाना प्रकार की अनुसन्धानशालाएँ और यज्ञशालाओं में मानो देखो उनका विचार-विनिमय होता रहा है और कोई ऐसा नृत नहीं है जो याग के ऊपर उन्होंने चयन न किया हो और मानव को एक-एक शब्द में बेटा ! देखो चित्रावलियों में उन्होंने दृष्टिपात किया है। एक-एक रक्त के बिन्दु में ब्रह्माण्ड को उन्होंने मापने का प्रयास किया। तो आज बेटा ! मैं इस सम्बन्ध में विशेष चर्चा न करता हुआ केवल यह कि महर्षि भारद्वाज मुनि के यहाँ देखो महर्षि व्रेतकेतु हुए हैं और व्रेतकेतु दद्दड़ ने अपने में विचार-विनिमय किया। परन्तु उन्होंने एक अणु को जाना और अणु को जान करके उसका विभाजन किया और जब उसका विभाजन किया तो उसमें सर्वत्र ब्रह्माण्ड दृष्टिपात हुए। और जब उस ब्रह्माण्ड वाले जिन चित्रावलियों का विभाजन किया तो उसमें से और भी ब्रह्माण्ड दृष्टिपात आने लगे। तो बेटा ! यह कैसा अनुपम जगत है जो **एक-एक परमाणु में ब्रह्माण्ड निहित रहता है।** जैसे शब्द के उच्चारण करने से उस शब्द में बेटा ! देखो शब्द पर ध्वनि पर ध्वनियाँ होती रहती हैं और वह ध्वनि को ही मुनिवरो ! देखो अपने में धारण करता हुआ मानव अपने में ध्वनित होता हुआ वह मानो देखो ध्वनि में परमाणु को दृष्टिपात करता है। और जब वह परमाणुवाद में जाता है तो उसमें शब्दों का एक नृतता में दृष्टिपात होने लगता है। तो विचार आता है बेटा ! कि यह अनुपम, जो परमात्मा का अनुपम है।

नाना प्रकार के याग

आओ, आज मैं तुम्हें उसी क्षेत्र में ले जा रहा हूँ जहाँ बेटा! इससे पूर्व काल में हम चर्चा कर रहे थे। इससे पूर्व काल में, राजा जनक के राष्ट्र में, राजा जनक की सभा में जहाँ नाना प्रकार के

यागों का चयन होता रहा है वहाँ एक ब्रह्मयाग का भी आयोजन होता रहा। क्योंकि हमारे यहाँ यूँ तो नाना प्रकार के यागों का वैदिक साहित्य में वर्णन आता रहता है। मेरे पुत्रो ! देखो कहीं इन्द्र-याग हैं, कहीं ब्रह्मयाग है तो कहीं विष्णु-याग है, कहीं रुद्र-याग है, कहीं मानो देखो अमृति पुत्रेष्टि यागों का वर्णन है। कहीं वाजपेयी-याग है, कहीं अग्निष्टोम याग हैं कहीं मानो देखो अश्वमेघ और अजा-मेध का वर्णन प्रायः वैदिक साहित्य में होता रहा है। कहीं देवी-याग का वर्णन है। तो कहीं मुनिवरो ! देखो अश्वमेघों में रमण करने वाले मानो देखो कहीं धर्नुविद्या का वर्णन होता रहता है, उसे धर्नुयाग कहा जाता है। तो नाना प्रकार के यागों का चयन प्रायः वैदिक साहित्य में होता रहा है। आज मैं मुनिवरो ! देखो उन यागों के चयन में तो, उनके कर्मकाण्ड में तुम्हें नहीं ले जा रहा हूँ।

महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि ब्रह्मवादिनी चाक्राणी गार्गी संवाद

आओ, मेरे प्यारे ! देखो मैं ब्रह्मयाग की चर्चा कर रहा था जहाँ ब्रह्मवेत्ता अपनी-अपनी स्थलियों पर विद्यमान होकर के अपने में ब्रह्म का चयन करते रहे हैं। और ब्रह्म के ऊपर मानो देखो अपने में विचार-विनिमय करते हुए मानो उसके ऊपर अपने संसार को और अपने को मापने का प्रयास होता रहा है। तो राजा जनक की सभा में बेटा ! देखो चाक्राणी गार्गी और याज्ञवल्क्य मुनि महाराज दोनों का विचार-विनिमय हो रहा था। उन्होंने ब्रह्मवेत्ताओं से पुनः यह प्रश्न किया क्या हे ब्रह्मवेत्ताओं देखो यह सृष्टि के कर्म से ले करके मैंने आचार्य से, ब्रह्मवेत्ता से प्रश्न किए हैं और वह जिज्ञासु बन करके किए हैं परन्तु इन्होंने यथोचित मेरे प्रश्नों का उत्तर दिया है। अब यदि तुम्हारी इच्छा हो तो मैं मानो ध्रुवा से ऊर्ध्वा में गमन करना चाहती हूँ। मैंने, इससे पूर्व यह मानो देखो ध्रुवा से ऊर्ध्वा में और ऊर्ध्वा से जो ध्रुवा में देखो मानव का वृत होता रहता है मैं उसके ऊपर विचार-विनिमय करना चाहती हूँ ऋषि से। तो ब्रह्मवेत्ताओं ने कहा कि देवी तुम प्रश्न करो। यह यथोचित उसका उत्तर दे सकेंगे, या न दे सकेंगे तो इनका

हृदयम ब्रहा कृति है। तो मेरे प्यारे ! देखो चाक्राणी उपस्थित हुई और चाक्राणी ने उपस्थित हो करके कहा कि हे ऋषिवर ! मैं आप से कुछ प्रश्न कर सकती हूँ? याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा देवी तुम प्रश्न करो। हे दिव्या जो मैं तुम्हारे प्रश्नों का उत्तर जानता हूँगा तो मैं अवश्य दे सकूँगा अन्यथा तुमसे नमः कह करके क्षमा का अक्षमायी बन जाऊँगा। तो मेरे प्यारे ! देखो उन्होंने कहा तो प्रभु आप ने मुझे ध्रुवा से ऊर्ध्वा में पहुँचाया है मानो देखो ये संसार पृथ्वी में और पृथ्वी मानो ब्रह्म में देखो यह पृथ्वी आपो में, आपो अग्नि में और अग्नि वायु में और वायु मानो देखो अवकाश में लय हो जाती है। तो यह परमाणुवाद अपने में, अपने ही स्वरूप में नृत करता रहता है। तो यह तो मेरे विचार में, मेरे हृदय में अंकित हो गये हैं परन्तु आगें मैं ध्रुवा से ऊर्ध्वा में कैसे जाता है, मैं उस जगत को और जानना चाहती हूँ। मेरे पुत्रो ! याज्ञवल्क्य ने कहा देवी तुम प्रश्न करो।

महत्तत्त्व कहाँ ओत प्रोत होता है

उन्होंने कहा तो प्रभु मैं यह जानना चाहती हूँ क्या आपने मुझे महत्तत्त्व तक पहुँचाया, शून्य बिन्दु तक पहुँचा दिया है। मानो देखो **अवकाश में जाने के पश्चात् आगे एक दूसरे में प्रतिष्ठित होता हुआ जगत एक बिन्दु में निहित हो जाता है।** तो प्रभु मैं यह जानना और चाहती हूँ कि जो महत्तत्त्व है यह कहाँ ओत-प्रोत होता है और इसकी कहाँ प्रतिष्ठा होती है? तो उस समय महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा क्या हे देवी यह जो महत्तत्त्व है मानो इनकी जो प्रतिष्ठा है वह चन्द्र लोकों में रहती है। मानो यह जो चन्द्र लोक है चन्द्रमा अमृत के देने वाला है और यह चन्द्रमा देखो रात्रि, अन्धकार का उपभोग करने वाला है और उपभोग करके ये ही अमृत को देने वाला है। अमृत ही अमृत को बिखेर देता है। तो यह चन्द्रमा में देखो यह महत्तत्त्व अपने में ओत-प्रोत हो जाता है अथवा उसी में ये प्रतिष्ठित हो जाता है और अपनी प्रतिष्ठा को प्राप्त करता रहता है। यह मानो देखो यह जो चन्द्रमा है, यह कान्ति युक्त है और यह अमृतमयी और

अमृत का व्रत करने वाला है। मानो देखो यह अपने में शीतल है और देखो यह उष्णता को भी शीतलता बनाता रहता है। यह जब रात्राणी ब्रव्हे क्रतम क्योंकि रात्रि का जो समन्वय है वह सूर्य से विच्छेद को कहते हैं। और चन्द्रमा का जब पहर आता है तो रात्रि के अन्धकार को देखो अपने में सींचने लगता है अपने में धारण करने लगता है और उसी मानो देखो अमृत को बिखेरने लगता है।

चन्द्रमा की प्रतिष्ठा कहाँ रहती है

मेरे पुत्रो ! देखो जब ऋषि ने ऐसा कहा तो चाक्राणी उपस्थित हो करके बोली ऋषिवर यह तो मैंने श्रवण कर लिया है परन्तु मैं यह जानना चाहती हूँ कि जब यह चन्द्रमा की प्रतिष्ठा कहाँ रहती है और चन्द्रमा किसमें ओत-प्रोत रहता है? उन्होंने कहा यही चन्द्रमा है जो सूर्य में प्रतिष्ठित हो जाता है। यह जो सूर्य—इसका प्रकाश आता है और मानो देखो चन्द्रमा इसके गर्भ में निहित हो जाता है। रात्रि भी इसी के गर्भ में निहित हो जाती है। यह नाना प्रकार की ऊर्ज्वा को देने वाला है इसको हमारे यहाँ अदिति कहते हैं। सूर्य का नामोकरण ही मानो देखो अदिति के नामों से वर्णित किया जाता है। तो विचार आता है कि यह मानो देखो सूर्य ही हमें प्रकाश देने वाला है। सूर्य ही मानो देखो चन्द्रमा की प्रतिभा को अपने में धारण कर रहा है। तो आओ मेरे प्यारे ! देखो वेद का ऋषि कहता है, आचार्य कहता है ब्रह्मणे वर्णनं ब्रव्हा सूर्यस्चतम यह सूर्य की ऊर्ज्वा है जिससे यह संसार प्रकाशमान होता रहता है और ऊर्ज्वा को प्राप्त हो करके ही मुनिवरो ! देखो नाना वैज्ञानिक सृष्टि के प्रारम्भ से ही नाना प्रकार के वैज्ञानिक बेटा ! अपने यन्त्रों का निर्माण करते रहे हैं और वह निर्माण करने वाले यन्त्रवाद मेरे प्यारे ! देखो यह अपने में मानो देखो लोकों की परिक्रमा होती रहती है और लोक एक दूसरे में प्रतिष्ठित रहते हैं। तो विचार आता है कि यह उदयन कहा जाता है। सूर्य का नाम उदयन भी कहा जाता है क्योंकि यह उदय होता है और उदय हो करके प्रकाश देता है, तो इसको उदयन कहते हैं। मेरे प्यारे ! देखो इसको अदिति के नाम से अथवा भास्कर भी कहते हैं। यह भासता रहता है। सदैव मग्न

रहता है। मग्न रह करके ये ऊर्ज्वा देता है और मुनिवरो ! देखो ऊर्ज्वा दे करके ये प्रकाशवान बनाता है। तो यह सूर्य में चन्द्रमा अपने में देखो प्रतिष्ठित हो जाता है। यह चन्द्रमा सूर्य में ओत-प्रोत हो जाता है।

यही मेरे प्यारे ! देखो वृष्टि का कारण बनता है। जब वर्षा का काल आता है वर्षा ऋतु जैसे ही समाप्त होती मानो देखो वर्षा ऋतु में जैसे सूर्य की किरणें पीले वर्ण में रत्त हुईं तो मुनिवरो ! देखो उस समय शुक्ल देखो कृष्ण पक्ष का वृत प्रारम्भ होता है। तो मानो देखो समुद्रों से जलों को ले करके यह समुद्रों से किरणों का जब मिलान होता है तो जलों का उत्थान होता है और जलों का उत्थान हो करके ही ये वृष्टि हो जाती है। और यह वृष्टि होते ही मानो देखो पृथ्वी नाना प्रकार के व्यंजनों वाली बन जाती है। तो विचार आता है कि यह मेरे प्यारे ! देखो यह प्रथम भवम् ब्रव्हे वृतम मुनिवरो ! विचार आता है कि जब वत्रासुर से इसका समन्वय होता है तो वृष्टि प्रारम्भ हो जाती है। प्रारम्भ हो करके यह नाना प्रकार के अन्नों वाली यह पृथ्वी बन जाती है। नाना प्रकार के मानो खनिजों वाली बन जाती है। तो विचारवेत्ता कहते हैं क्या यह जो सूर्य है यह मानो देखो ऊर्ज्वा के देने वाला है और इसमें चन्द्रमा प्रतिष्ठित हो जाता है।

सूर्य कहाँ प्रतिष्ठित होता है

मेरे प्यारे ! देखो जब ऋषि ने इस प्रकार विवेचना की तो चाक्राणी गार्गी ने उपस्थित हो करके कहा हे प्रभु ! मैं सदैव यह जानती रहती हूँ कि अमृतम् ब्रहे यह अमृतोमयी माता भी मुझे जब लोरियों का पान कराती थी तो मुझे श्रवण कराती रही है। आचार्यों ने भी मुझे इस प्रकार का वर्णन किया है परन्तु मैं जानना चाहती हूँ कि यह सूर्य कहाँ प्रतिष्ठित होता है? उन्होंने कहा यह जो सूर्य है यह गन्धर्वः लोकों में ओत-प्रोत हो जाते हैं और गन्धर्वः लोकों में ये प्रतिष्ठित हो जाते हैं। जैसे हमारा यह सूर्य मण्डल है ऐसे ही एक मण्डल मानो देखो गन्धर्वः कहलाता है जो सौरमण्डल का अन्तिम मनका कहलाता है। उसमें मानो देखो यह चन्द्रमा और सूर्य अपने में ओत-प्रोत हो जाते हैं। ये उसमें प्रतिष्ठित हो जाते हैं। जैसे माता के गर्भस्थल में

मानो देखो शिशु विद्यमान होता है उसके अंगों और प्रत्यंगों का निर्माण होता है परन्तु देखो उसी में वह निहित रहता है, उसी में प्रतिष्ठा को प्राप्त कर रहा है। इसी प्रकार ये सूर्य भी मानो देखो गन्धर्व में अपनी प्रतिष्ठा को प्राप्त करता है और ऊर्ज्वा से, ऊर्ज्वा से समन्वय रहता हुआ मानो द्यु से इसकी प्रतिभाषितता होने लगती है।

मेरे पुत्रो ! देखो जब ऋषि ने इस प्रकार वर्णन किया। वर्णन करते उन्होंने कहा यह गन्धर्वः देखो यह जो मण्डल है, यह जो परमात्मा का ब्रह्माण्ड है इस ब्रह्माण्ड में जब वैज्ञानिकजन देखो लोकों की गणना करने लगे तो **गणना करते-करते अन्तिम जो माला का मनका रह गया उसको गन्धर्वः कहा जाता है** और गन्धर्वः से ही मानो देखो इस लोक की गणना का प्रारम्भ होता है। मेरे प्यारे ! देखो मैंने तुम्हें कई कालों में वर्णन कराते हुए कहा है। आज मैं उस वर्णन में तो नहीं जाना चाहता हूँ केवल परिचय देने के लिए आया हूँ और वह परिचय यह है क्या जब मुनिवरो ! देखो गन्धर्वाम् ब्रह्मे वर्णस्सुतम वेद का वाक् कहता है क्या जब वैज्ञानिक इस पृथ्वी के ऊपर विचार-विनिमय करते हैं तो **पृथ्वी से ही विज्ञान का प्रारम्भ होता है। गुरुत्व से प्रारम्भ होता है।** यही गुरुत्व, तरलत्व और तेजोमयी परमाणुओं को ले करके यह देखो मानव इस संसार को जानने का प्रयास करता रहा है। कहीं उन्होंने देखो अणु और परमाणुओं में, कहीं देखो अपने मन और प्राण को अपने अन्तःकरण में प्रवेश कराते अन्तःकरण जगत को जान करके और उसको बाह्य जगत में उसका प्रसारण किया है। तो मेरे पुत्रो ! देखो उस समन्वय में आज विचार-विनिमय केवल हमारा यह है क्या मुनिवरो ! वह ब्रह्मणे ब्रह्मणम् ब्रह्मे गन्धर्वानम् ब्रीही वह जो गन्धर्वः है वह पृथ्वी से ले करके पृथ्वी और देखो यह पृथ्वी सूर्य और सूर्य से मुनिवरो ! देखो गन्धर्वः और गन्धर्वः से आरुणी और आरुणी से ध्रुव और ध्रुव से देखो मूल और मूल से पुष्प नक्षत्र और पुष्प से स्वाति नक्षत्र और स्वाति से ही मुनिवरो ! देखो वृणी अचंग इत्यादि लोकों में जाने के पश्चात् इन सब लोकों की प्रतिष्ठा मानो

गन्धर्वः में प्राप्त हो जाती है। और यह गन्धर्वः इस प्रकार का मण्डल है मानो देखो इसी को जानते इससे सौरमण्डलों की एक माला बन जाती है। सौर मण्डलों की माला बनी है और सौर मण्डलों की मालाओं से ही आकाश गंगाओं की माला बनती हैं। और आकाश गंगा से मुनिवरो ! देखो निहारिका, निहारिका से मुनिवरो ! अवन्तिका का निर्माण होता रहा है। आज मैं इसका स्पष्टीकरण विस्तार रूप से नहीं कर पाऊँगा केवल विचार यह कि हम तुम्हें परिचय देने के लिए आए हैं। मेरे प्यारे ! देखो अमृतम् ब्रह्मे देखो गन्धर्वः में यह सूर्य ओत-प्रोत हो जाता है, उसी में प्रतिष्ठित हो जाता है।

गन्धर्व कहाँ प्रतिष्ठित होता है

मेरे पुत्रो ! देखो जब ऋषि ने इस प्रकार वर्णन किया तो उस समय चाक्राणी बोली कि प्रभु मैं यह और जानना चाहती हूँ क्या यह गन्धर्वः कहाँ प्रतिष्ठित होता है? उन्होंने कहा यह जो गन्धर्वः है यह इन्द्र लोकों में प्रतिष्ठित होता है। हमारे वैदिक साहित्य में इन्द्र के बहुत से पर्यायवाची शब्द हैं। इन्द्र नाम राजा का है। इन्द्र नाम परमात्मा का है और इन्द्र नाम आत्मा का है जो इन्द्रियों का स्वामी है उसे इन्द्र कहते हैं। और जो राष्ट्र का स्वामी है उसे इन्द्र नामों से वर्णित किया गया है। और परमात्मा क्योंकि यह संसार अमृतम् ब्रह्मे देखो रचियता होने से वह देवताओं का भी देवता इन्द्र है। इसी प्रकार मेरे प्यारे ! देखो यहाँ गन्धर्व लोकों का नाम भी इन्द्र कहा गया है। वह इन्द्र लोकाम् ब्रह्मा देखो जहाँ गन्धर्व अपने में प्रतिष्ठा को प्राप्त करता है। जब आचार्यों ने बेटा ! एकन्त स्थली में विद्यमान हो करके इन लोक लोकान्तरों के ऊपर उन्होंने गम्भीरता से विचार-विनिमय किया तो मेरे प्यारे ! देखो इन्द्राम भवत प्रव्हे यह इन्द्र लोकों में दृष्टिपात आने लगा। समाधि लगा-लगा करके मन और प्राण को देखो एक सूत्र में ला करके उन्होंने बेटा!...(शेष रिकार्डिंग अस्पष्ट)

दिनाँक : 30 अगस्त, 1992
समय : प्रातः 11 बजे
स्थान : जयदेव पार्क, नई दिल्ली

।। ओ३म् ।।

मानव योगी कैसे बने?

आज मानव प्रायः यह कहता चला जा रहा है कि योग विधाता की एक ऐसी देन है जिसको पा करके मानव कहीं का कहीं पहुँच जाता है। वह मानव परमात्मा की सृष्टि का जानने वाला बन जाता है। आज हमें विचारना यह ही है कि विधाता की उस अमूल्य निधि को कैसे जानेंगे? आज हम योगी कैसे बनेंगे?

मुनिवरो ! योगी उसी काल में बनेंगे जैसा हमने यौगिकता की भूमिका को तुम्हारे समक्ष निर्णय कराया था। **योगी बनने के लिए सबसे प्रथम अपने विचारों को यथार्थ बनाना है।** अपनी त्रुटियों को खोजना है। आज हमें दूसरों की त्रुटियों पर नहीं जाना है। जब हम अपनी त्रुटियों को अच्छी प्रकार खोजने लगेंगे तो उसके पश्चात् धारणा, ध्यान और समाधियों में लय होने लगेंगे। यह आत्मा प्राणों सहित जब आगे को चलता है, शरीर के सभी चक्रों में पहुँचता हुआ नाना प्रकार की अड़चनों को शान्त करता हुआ आगे को बढ़ता चला जाता है। बढ़ते-बढ़ते परमात्मा के स्थलों में पहुँच जाता है जहाँ मानव का जीवन महान् से महान् और पवित्र बन जाता है। उस पर आज हमें विचार लगाना है। धारणा, ध्यान, समाधियों द्वारा मन को जान लेते हैं कि यह कितना तीव्र चलने वाला है।

आज तो मानव कह रहा है कि एक शरीर में दो आत्माओं का कैसे निरीक्षण किया जाता है परन्तु इस पर मानव को विचारने की आवश्यकता है। अरे ! जिसने यौगिक-क्रियाओं को जाना ही नहीं केवल उच्चारण ही उच्चारण करता जाता है कि मैं योगी हूँ परन्तु यह नहीं जानता कि योग मार्ग क्या है? योग में क्या-क्या परिस्थितियाँ मानव के द्वारा आती हैं? आत्मा के द्वारा क्या-क्या नाना प्रकार के

स्थल आते हैं? जिस मानव ने एक स्थान में विराजमान हो करके गायत्री मन्त्रों को अच्छी प्रकार पाठ न किया हो और न उसकी साधना ही हो और वह कहता है कि मैं योगी हूँ, परमात्मा के प्रत्येक ज्ञान और विज्ञान को जानता हूँ तो मुनिवरो ! यह मानव का केवल अहँकार मात्र है। आज मानव को स्वार्थमात्र से विचार नहीं लगाना है। सबसे पूर्व गम्भीरता से आवश्यकता है। जिस काल में गम्भीरता से विचारने लगेंगे उस काल में अपनी त्रुटियों को देखने लगेंगे। उस काल में हमें ज्ञान हो जाएगा कि सँसार कौन से विस्तार वाला है। परन्तु जिस मानव ने यह नहीं जाना कि मेरे द्वारा कितनी त्रुटियाँ हैं और कहता चला जा रहा है कि मैं परमात्मा की सर्वज्ञ विद्याओं को जानने वाला हूँ तो यह केवल अहँकार है। यह केवल अपने मन ही मन गौरव प्रकट कर रहा है। किसी दार्शनिक समाज में या किसी यौगिक मण्डल में जाकर उसकी महान् अपकीर्ति हो जाती है। **योगी बनने के लिए आज हमें धारणा, ध्यान, समाधियों में लय होना है।** उनके ऊपर पुनः विचार करना है। आज हमें अपने मन से गायत्री माता का पाठ करके आगे बढ़ना है।

मुनिवरो ! आज योगी बनने के लिए हमारे द्वारा नाना प्रकार के प्रश्न आते हैं। यह प्रश्न भी आता है कि यह शरीर में दो आत्माओं का आगमन होता है या नहीं। इसका क्या अभिप्राय है? इसमें किस प्रकार की क्रियाएँ मानी जायेंगी।

मेरे प्यारे महानन्द जी ने एक काल में कहा था कि आज का मानव ज्ञान से विहीन बनता चला जा रहा है। योग से तो सँसार बहुत ही दूरी पर चला गया है। हमने वह काल देखा है जिस काल में प्रत्येक मानव, प्रत्येक देवकन्या यौगिक क्रियाओं की कुछ न कुछ विधियों को जानते थे। आज वह समय कहाँ चला गया? प्रभु से नित्यप्रति कहा करते हैं कि हे विधाता ! वह समय किस काल में आएगा जिस काल में वेदमन्त्रों का पाठ प्रत्येक मानव, प्रत्येक देवकन्या

के कण्ठ में होगा। जब माता गायत्री का एक महान् उच्च स्वरों से गान गाया जायेगा। आज इस समय का परिवर्तन चाहते हैं। हे देव ! हमारे समक्ष उसी समय को प्रकट करो जहाँ गम्भीर व्यक्ति हों, जहाँ प्रत्येक मानव प्रत्येक वस्तु को विचारने वाला हो। हे विधाता ! हमें उस समाज की आवश्यकता नहीं जहाँ अभिमान हो। अपने से बड़ा सँसार में किसी को न मान रहा हो। हे विधाता ! जब सँसार में ऐसे-ऐसे अभिमानी उत्पन्न हो जायेंगे तो उनका अभिमान आपके अन्तरिक्ष में रमण करेगा। प्रतीत नहीं होता कि वह अभिमान किस-किस मानव को नष्ट-भ्रष्ट कर देगा। हे विधाता ! हमें तो वो व्यक्ति चाहिएँ जो निराभिमानी हों, विद्या से परिपक्व हों अर्थात् जिनके द्वारा अनन्त विद्या हो। हे देव ! हे सखा ! हे मित्र हम आपकी शरण में आए हैं। हमारे द्वारा उस महत्त्व को प्रदान करो जिससे विधाता हम महान् बनें, विचित्र बनें, यौगिक बनें।

मुनिवरो ! यौगिक बनने के लिए पुनः विचार करना है। **सबसे पूर्व अभिमान को त्यागना है।** जिस मानव ने 'मैं' को नहीं त्यागा, अपनी त्रुटियों को तथा अपने हृदय के दोषों को शान्त नहीं किया और कह रहा है कि आज मैं योगी बन जाऊँ तो बेटा ! वह योगी कदापि नहीं बनेगा। वह तो नाना प्रकार की अशुद्धियाँ अपने जीवन में धारण कर रहा है। न प्रतीत अगले जन्मों में कौन-कौन सी योनियाँ प्राप्त हों और क्या-क्या भोगना पड़े। आज हमें यौगिक बनना है। **यौगिक क्रियाओं के लिए हमें सबसे पूर्व प्राणायाम की आवश्यकता है।** अहा ! पूर्व हमें यह देखना है कि हमारे द्वारा कितनी त्रुटियाँ हैं? हमें तो सँसार की त्रुटियों पर कदापि नहीं जाना है। हमें तो अपनी त्रुटियाँ बहुत गम्भीरता से विचारनी है। **गम्भीरता उसी काल में आती है जब मानव अपनी त्रुटियाँ देखने लगता है।**

आज यौगिक बनने के लिए सँसार की विचित्रता को नहीं देखना है। हमारे द्वारा नाना विचित्रता है उन्हें धारण करना है।

हमारे द्वारा क्या विचित्रतायें हैं?

मुनिवरो ! जैसे सँसार में माता के कितने रूप माने जाते हैं। वह माता रूप में भी है, पत्नी रूप में भी है, पुत्री रूप में भी है, भौजाई रूप में भी है, इसी प्रकार मानव के द्वारा परमात्मा ने विचित्रतायें प्रकट की हैं। मुनिवरो ! यौगिक क्रिया में जब यह आत्मा प्राणों के सहित कुम्भक और रेचक क्रियाओं से मूलाधार में पहुँचता है तो वहाँ प्राणों की ऊँची प्रगति हो जाती है और मानव को प्रतीत होने लगता है कि हमारा शरीर किन-किन तत्त्वों से बना हुआ है और उस स्थल पर क्या-क्या कार्य हो रहा है? आगे बढ़ता हुआ यह आत्मा नाभि चक्र में पहुँचता है। नारद मुनि आचार्यों ने इसे शरीर का केन्द्र माना है। वहाँ प्रतीत होता है कि हमारे शरीर में यह नस और नाड़ियाँ कितनी महान् और विचित्र हैं। परमात्मा ने इन वस्तुओं को कैसे बनाया। आगे बढ़ता हुआ यह आत्मा ऐसे तत्त्वों को अनुभव कर लेता है जो नेत्रों से दृष्टिगोचर नहीं आते। मुनिवरो ! आगे बढ़ता हुआ यह आत्मा हृदय चक्र, घ्राण चक्र, ब्रह्मरन्ध्र और शून्य चक्रों में जा पहुँचता है। मुनिवरो ! उस समय योगी को परमात्मा की सृष्टि का स्वतः अनुभव हो जाता है।

आज तो मानव कहता है कि कैसे हो जाता है? मेरे प्यारे महानन्द जी ऐसे विचित्र आत्मा हैं कि देखो यह यहाँ विराजमान हैं और हम आज्ञा दें तो लोकान्तरों की क्या प्रत्येक राष्ट्रों की वार्ता हमारे समक्ष नियुक्त कर देंगे, यह स्वतः जान लेते हैं। यह क्या है? इसको जानने के लिए हमें बहुत गम्भीरता से विचार करना है और योगी बनना है। इसके लिए त्यागी और तपस्वी बनने की आवश्यकता है। **बिना त्याग व तपस्या के योगी बनना मानव का केवल स्वप्न मात्र है।**

पूज्यपाद–गुरुदेव

(यौगिक प्रवचन माला भाग–1)

।। ओ३म् ।।

Spiritual Lights [Contd.]

Once Mahananda ji tried to know from me about Vedic knowledge and how it was revealed to Mankind. I replied that it was aquired from 'Anahadnada' This 'Nada' (Vibrations) resonated in Brahamrandra (cavity in the skull). When the 'Hirdya' (heart) and 'Brahamrandra' come into contact with each other, the 'Gyan' and 'Karma' Indriyas (Organs of Perception and Action) give rise to resplendent vibrations. When these vibrations come in contact with 'Brahamrandra' a plexus in the 'Brahamrandra' comes into operation whose effulgence exceeds the brilliance of a thousand Suns. When this light operates in cyclic order numerous sounds originate and it spreads far and wide in cosmos which includes the "Deva Loka" and the sounds pervading the' Deva Loka' Constitute the' Anhadnada', When a Yogi fully understands these sounds and commits them to writing these very sounds give rise to Grammar. O Sages! I will remember the words of my Guru that voices of millions of years are still present in the 'Diu Loka', which the yogi hears through yoga.

O Sages ! Veda means knowledge, not books. The Vedic lore is as commonplace as the light in the universe which purifies man's' Antakarna' (inner instrument) And the purified 'Antakarna' grasps 'Anhadnada' and it is from 'Anhadnada' that 'Gayatri Chhanda' comes into being. O Sages ! Gayatri means a song which is sung through Brahamrandra. We have to understand these vibrations. Just as the external world is connected with the physical body through the mind, the mind is connected with the intellect and the intellect is linked with the 'Hirdya' (Heart) and the 'Hirdya' is connected with 'Brahamrandra' and Brahamrandra is connected with the cosmos. Voices always rush in 'Diu Loka' and this is termed as god's 'Hirdya'. When God's heart contacts a Yogi's heart, it is called yoga (Union). This yoga enables a yogi to gain knowledge of vibrations of sounds.

Oh Sages ! when the heart which is made of five subtle elements is brought in contact with vibrations of 'Diu Loka', where Divine souls (which have discarded their physical coil) contact yogi's souls, the yogi acquires complete knowledge that he is seeking and thus our great seers acquire the knowledge of Vedas.

Oh Sages ! Just as we have this material world, similarly there is 'Diu Loka' where Jiwan-Mukta" (near liberation souls) live. Among them there are such souls as are dominated by fire elements & which are above attachment. These Divine souls are known as 'Deva Purshas'. Words in the microsome forms in 'Diu Loka' are indestructible and hence Oh Sages ! you should try to purify your words and if the words become impure, it will have impact on the entire universe. These atoms go into the making of 'Antakarna'. When these atoms become impure, the 'Satwik' elements decrease, the Indriyas (senses) are permeated with selfishness and due to this, words become polluted. Selfishness reigns supreme and at such a time a bloody revolution breaks out.

O Sages !

The point that I have been driving home is that we have to establish contact with those divine souls. My beloved Mahanand ji ! you know very well that the Yogis have to their credit austere practices of several births. By virtue of those long observed disciplines and practices, man becomes capable of establishing contact with the divine souls. The wave current of his thoughts, his mind, his vocal faculty, his intellect and those of his soul-conscience, all are rendered sublime and pure, the three bodies, the gross, the subtle and the causal, are charged with those currents. The mind alone has about one hundred and thirty six currents. If we can know one current the second, the third and so on become successively known, You see, thirty six types of currents are considered to be belonging to the gross body and about seventy two belong to the subtle body. In this way the

currents are many but I am making only a brief description. The intellect has one hundred and eighty four types of currents, Eighty four types of currents flow between the gross body and the sub-conscience. Eighty eight currents are such which are related to the subtle body. Other currents are considered to be belonging to the causal body. Similarly the divine lights belonging to vision are said to have been' constituted of 372 radiations of currents. 384 are said to be the currents belonging to the audio faculty. All these currents are related both to the Mind as well as to the Prana (the vital force). When the Mind and the Prana are harmonised, these currents are also synchronised. At that stage, my dear son, the being is transformed into a sort of causal light which attains God-hood. My son ! That particular goal is called Moksha (Salvation). It is attained when the Mind and the Prana are aligned, harmonised.

From which 'ghrit' (oblation) will these currents be actuated? I had dwelt upon this in my talks yesterday. For example cow's 'ghrit' (the essence and the essential oblation) is used in the Yajna-shala. It is the essence of the vegetables which the cow consumes. When that 'ghrit' is used as oblation, fire is lit up ; thousands of fire currents come into being. Similarly our senses have their respective currents. What type of 'ghrit' has to be offered to the 'Chitta' (the consciousness) which is the repository of our sense- lmpressions ?, What type of oblation is that? In this regard Bhringi Rishi and also many other rishis have expressed their views. It has been acknowledged that oblation constitutes partly of our thoughs and partly of our expressions. Just as the Yajna-mann (performer of the Yajna) gathers several types of sanctifying herbs and prepares 'Somrasa' (nectarine juice) out of those, similarly the Yogi also prepares a qualitative type of 'Somrasa'. Of what is that qualitative 'Somrasa' made? It is derived out of the ten Pranas and is then mixed up with the Mind currents. This process yields a very holy 'ghrit'. When this ghrit is offered as oblation along with the sense-objects, then that

great person, revelling into the Divine worlds transcends to the highest status of Godhood.

O Sages ! to-day I do not want to go deeper into this subject. It can, of course, be dealt with more profoundness but what I want to impress upon is that we should strive to live under the shadow of that Supreme Father; we should become the knowers of that 'ghrit' which is produced by the grace of that supreme soul. That 'ghrit' is activating the world of matter also. The same glorifies man's life. The same is the great Principle which pervades the Divine worlds. The person who knows all these currents, he becomes the seer of the entire panorama which is taking place in the gross, the subtle and the causal bodies and in the various Suns and the worlds, of this cosmos. That Yogi becomes capable of transcending into the various worlds through out. Just as an exponent of the physical sciences, having studied the atomic character of matter and thereby having developed material instruments becomes capable of visiting the various worlds, similarly sublimated body of a Yogi renders him capable of transcending into the various worlds of this entire cosmos. I am afraid lest I should not digress while so talking. To-day we are going to talk about the various worlds. What is the type of Yoga in Solar sphere? What type of 'Yoga' characterises Mars, the Dhruva planet & the Jethai Star ? What type of Yoga dominated in the Asasvati worlds, in the Vashishta, Arundati, Saptrishi spheres and the other various types of spheres? That is the subject of our thoughts today.

As a matter of fact it is recognised, as I have related to you to-day, that for the divine souls there is left no world where they can not go. But besides that there is a usual consideration. In the solar sphere the Yajna and Yoga is performed with thoughts. With the thoughts we transcend ourselves. Because only that soul is capable of transcending into the solar sphere which has austered itself on the Earthly sphere. That soul does not have any specific attachment with the Earthly principle. Its sub conscience

is austered and seasoned by the Fire principle. It develops the characteristics, of such bodies which dominate with the Fire principle. In Mars, the living beings, their Yoga practice, their science and national order are considered to be akin to those as existing on this Earth. In the Lunar sphere, the being of 'Som' nature is considered to exist. There also is a pattern of Yoga. There also the glory of this vast panorama pervades.

To-day I am going to make a celestial expression. It often haunts my memory. In the modern times, as my dear Mahanand ji has apprised me, a scientist namely Somatiti has circumnavigated round this Earth planet several times. Again, as I am being intuited by the elemental atmosphere around me, there is a Spiritual master to-day who is named as Ridhiketu. He has made great strides in the field of Spiritual Science. The movement of his soul is so great that it returns to its casing after visiting this sphere of the Earth. Similarly, there are thoughtful deliberations in the Solar sphere. Just as divine souls deliberate and express thoughts on this Earth sphere, likewise it happens in the other spheres also. In some sphere the Fire principle predominates where as in some others the water element predominates. On this Earth planet, the Earth element predominates. In this regard I do not want to give much description to day. Only what I want to impress is that where the Fire principle predominates, there yajna and yoga are performed with the oblation of thoughts. There the 'ghrit' is said to be constituted of thoughts only. Where the Earth element (Parthiv Tatva) predominates, the 'ghrit' is obtained from animal kingdom (which in its turn lives on vegetable kingdom).

Pujyapad Gurudev

Yogic Wisdom of the Ancient Rishies.

Parvachan Dated 13th April, 1971

।। ओ३म् ।।

स्मृति

स्व. श्री जगदीश त्यागी

श्री राजकिशोर त्यागी जी निवासी ग्राम मकनपुर, जिला–गाजियाबाद, उ.प्र. ने प्रकाशन कार्य के लिए 1101/– रु. का सात्विक सहयोग अपने बड़े भाई स्व. श्री जगदीश त्यागी जी की स्मृति में समिति के कार्य को प्रोत्साहित करने के लिए उनके 77वें जन्मदिवस के उपलक्ष्य में अर्पित किया है। जिससे अपने पितरों को श्रद्धापूर्वक नमः करते हुए समाज को वैदिक ज्ञान से सम्पन्न करने में अपनी सात्त्विक आहुति को प्रदान किया है। यह परिवार पूज्यपाद गुरुदेव के सान्निध्य में आने के पश्चात् निरन्तर उनके प्रवचनों व क्रियाकलाप से प्रभावित होता चला गया और उनके साहित्य का अध्ययन करते हुए अपने जीवन को याज्ञिक बनाने में संलग्न हो गया। समय–समय पर इस परिवार ने तन–मन–धन से किसी न किसी रूप में अपना सहयोग गाँधी धाम समिति व वैदिक अनुसँधान समिति के कार्यों में निरन्तर प्रदान किया है जिसके लिये समिति हृदय से आभार प्रकट करती है और परमपिता परमात्मा से परिवार के सभी सदस्यों के लिए सुख, समृद्धि व शान्ति के लिए प्रार्थना करती है।

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)

योगनिष्ठ पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज (शृङ्गी ऋषि जी) की अमृतवाणी संहिता के रूप में

1.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 1)	80.00
2.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 2)	50.00
3.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 3)	50.00
4.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 4)	50.00
5.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 5)	50.00
6.	Yogic Wisdom of Ancient Rishis	50.00
7.	वेद पारायण–यज्ञ का विधि विधान	25.00
8.	आत्म–लोक	35.00
9.	धर्म का मर्म	30.00
10.	शंका–निवारण	30.00
11.	यज्ञ–प्रसाद अर्थात् यज्ञ का महत्व	40.00
12.	आत्मा व योग–साधना	35.00
13.	देवपूजा	20.00
14.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 1)	110.00
15.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 2)	110.00
16.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 3)	100.00
17.	रामायण के रहस्य	35.00
18.	यज्ञ एवं औषधि विज्ञान	40.00
19.	महाभारत के रहस्य	25.00
20.	अलङ्कार–व्याख्या	35.00
21.	रावण–इतिहास	50.00
22.	महाराजा–रघु का याग	25.00
23.	वनस्पति से दीर्घ–आयु	35.00
24.	मोक्ष प्राप्ति का मार्ग	30.00
25.	चित्त की वृत्तियों का निरोध	25.00
26.	आत्मा, प्राण और योग	35.00
27.	पंच–महायज्ञ	30.00
28.	अश्वमेघ–याग और चन्द्रसूक्त	30.00
29.	याग–मन्जूषा	25.00
30.	आत्म–दर्शन	30.00
31.	पुत्रोष्टि–याग और मातृ–दर्शन	25.00
32.	याग और तपस्या	45.00
33.	यागमयी–साधना	35.00
34.	यागमयी–सृष्टि	25.00
35.	याग–चयन	25.00
36.	दिव्य–रामकथा	110.00
37.	ज्ञान–कर्म–उपासना	25.00
38.	दिव्य–ज्ञान	35.00
39.	महाभारत एक दिव्य दृष्टि	80.00
40.	महर्षि–विश्वामित्रा का धनुर्याग	25.00
41.	आत्म–उत्थान	30.00
42.	तप का महत्व	30.00
43.	अध्यात्मवाद	25.00
44.	ब्रह्मविज्ञान	35.00
45.	वैदिक–प्रभा	30.00
46.	प्रकाश की ओर	35.00
47.	कर्तव्य में राष्ट्र	35.00
48.	वैदिक–विज्ञान	35.00
49.	धर्म से जीवन	30.00
50.	आत्मा का भोजन	35.00
51.	साधना	30.00
52.	त्रोताकालीन–विज्ञान	40.00
53.	यज्ञोमयी–विष्णु	40.00
54.	यौगिक प्रवचन माला भाग–6	60.00
55.	स्वर्ग का मार्ग	40.00
56.	यौगिक प्रवचन माला भाग–7	60.00
57.	माता मदालसा	40.00
58.	यौगिक प्रवचन माला भाग-8	60.00
59.	यौगिक प्रवचन माला भाग-9	65.00
60.	यौगिक प्रवचन माला भाग-10	70.00
61.	याग एक सर्वाङ्ग पूजा	80.00
62.	यौगिक प्रवचन माला भाग-11	80.00
63.	यौगिक प्रवचन माला भाग-12	80.00
64.	मानव कल्याण की चर्चाएं	50.00
	पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज एवम्, कर्म भूमि लाक्षागृह	10.00

पुस्तक प्राप्ति के स्थान

योगनिष्ठ पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज की अमृतवाणी का साहित्य सँहिता, कैसेट्स, सी. डी. व डी. वी. डी. के रूप में निम्न स्थानों पर उपलब्ध है

1. श्री महानन्द संस्कृत महाविद्यालय, लाक्षागृह, बरनावा, जिलाबागपत, (उ.प्र.)। दूरभाष : 01234240395
2. श्री गुरुवचन शास्त्री, मकान नं. 165/30ए, दक्षिण भोपा रोड़, निकट माढ़ी की धर्मशाला, नई मण्डी, मुजफ्फरनगर (उ. प्र.)। दूरभाष : 01312606414
3. सुश्री. नीरू अबरोल, के-3 लाजपत नगर-3, नई दिल्ली। दूरभाष : 011-41721294
4. डॉ. मधुसूदनेश्वर प्रकाश, A-59 पंचशील एन्क्लेव नई दिल्ली-110017 दूरभाष : 011-26498737
5. श्री अनिल त्यागी, सी-47 रामप्रस्थ, गाजियाबाद (उ.प्र.)। दूरभाष : 0120-4165802
6. श्री लोमश त्यागी, 106/4 पंचशील कालोनी गढ़ रोड़, मेरठ, (उ.प्र.) दूरभाष : 9410452076
7. डॉ. अशोक कुमार आर्य, आर्यावर्त कालोनी निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा, जिला-जे.पी. नगर (उ.प्र.) दूरभाष : 09412139333
8. श्री विवेक त्यागी, 16ए अशोक कॉलोनी, अल्कापुरी, हापुड, (उ.प्र.)। दूरभाष : 0122-2316196
9. श्री आशीष त्यागी, डी-293, रामप्रस्थ, पोस्ट ऑफिस चन्द्रनगर, गाजियाबाद पिन कोड-201011 (उ.प्र.)। दूरभाष : 0120-2642052
10. मैं. हर्ष मेडिकोज, ए-2/31, सैक्टर-110एमार्किट नोएडा, फेस-2, (उ.प्र.) दूरभाष : 9899228860, 9871367937
11. श्री संजीव त्यागी, 1107, सैक्टर-3, बल्लभगढ़, फरीदाबाद हरियाणा। दूरभाष : 9910589486
12. श्री सुमन कुमार शर्मा, जे-380, सैक्टर बीटा-2, ग्रेटर नोएडा, (उ.प्र.) दूरभाष : 9313530505
13. श्रीमती बाला, 251, दिल्ली गेट, नई दिल्ली। दूरभाष : 011-23282088
14. श्री सतीश भारद्वाज, ग्राम बहेडी, रोहाना मिल, जिला मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)।
15. मैं. विजय कुमार, गोविन्द राम हासानन्द, 4408, नई सड़क, दिल्ली। दूरभाष : 011-23977216
16. जवाहर बुक डिपो, बुढ़ाना गेट, आर्य समाज मेरठ शहर (उ.प्र.)।

मासिक सहयोग

श्री हरीराम गुप्ता, केसर स्टील, वजीरपुर, दिल्ली	1000 रुपये
श्री विवेक त्यागी, अल्कापुरी, हापुड़	1000 रुपये
श्री चिंतामणि त्यागी एवं श्री जगमोहन त्यागी बरला, मुजफ्फरनगर	1000 रुपये
श्री अरुण त्यागी, राजनगर, गाजियाबाद	500 रुपये
श्री संजीव त्यागी (दिनकरपुर) फरीदाबाद	500 रुपये
श्री विनोद त्यागी सुपुत्र श्री जयप्रकाश त्यागी मकनपुर, गाजियाबाद	500 रुपये
मा. कार्तिक त्यागी सुपौत्र श्री रामनिवास त्यागी ग्राम भंगेल, नोएडा	251 रुपये
मा. लोमश त्यागी सुपौत्र श्री रामनिवास त्यागी ग्राम भंगेल, नोएडा	251 रुपये
डॉ. शुचि, डॉ. राजीव, आणद, गुजरात	250 रुपये
श्री राकेश शर्मा, विराट नगर, पानीपत, हरियाणा	200 रुपये
डॉ. ओ.पी. आर्य, आगरा	125 रुपये
श्री गुलजार सिंह, जगत पुरी, कृष्णा नगर, दिल्ली	100 रुपये
श्रीमती वीना त्यागी, अलीगढ़।	100 रुपये
मास्टर कवन्धि, रामप्रस्थ, गाजियाबाद	101 रुपये
मास्टर सिद्धार्थ, अँकुर अपार्टमैन्ट, दिल्ली	101 रुपये

नम्र–निवेदन

पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज ने अपने प्रवचनों में वेद मन्त्रों का गान करते हुए उनकी प्रचलित भाषा में व्याख्या की है। उसी अमृत वाणी को जनकल्याण के लिए ''संहिता'' रूप में प्रकाशित करने के लिए वैदिक अनुसन्धान समिति सभी श्रद्धालु एवम् दानदाताओं से सहयोग के लिए आह्वान करती है जिससे कि प्रकाशन का कार्य सुचारू रूप से ऊर्ध्वा गति को प्राप्त होता रहे। सहयोग की राशि समिति के बैंक खाते में स्वेच्छानुसार भेजने के लिए बैंक का विवरण निम्न प्रकार से प्रस्तुत है :–

पंजाब नैशनल बैंक, खान मार्केट, नई दिल्ली

बैंक खाता नं. – 0149000100229389, IFSC Code – PUNB–0014900

वैदिक अनुसन्धान समिति (पंजी.)

।। ओ३म् ।।

राष्ट्र कल्याण यजुर्वेद ब्रह्म पारायण याग

19 दिसम्बर, 2014 से 21 दिसम्बर 2014 तक

परमपिता परमात्मा की असीम अनुकम्पा से एवं पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज की पावमानी प्रेरणा से गुरुकुल लाक्षागृह, बागपत के तत्वावधान में अशोक कालोनी, अल्कापुरी, हापुड में राष्ट्र कल्याण यजुर्वेद ब्रह्म पारायण महायज्ञ अत्यन्त हर्ष के साथ आयोजित किया जा रहा है। आप परिवार व इष्ट मित्रों सहित सादर आमंत्रित हैं। कृपया पधार कर यज्ञाहुति प्रदान कर एवं तन, मन, धन का सहयोग देकर, पुण्य के भागी बनें।

यज्ञ के ब्रह्मा : आचार्य गुरुवचन शास्त्री गुरुकुल लाक्षागृह, बरनावा, बागपत

उद्गाता : गुरुकुल लाक्षागृह, बरनावा, बागपत के सुयोग्य आचार्य एवं ब्रह्मचारीगण

विस्तृत कार्यक्रम

19 दिसम्बर से 20 दिसम्बर

प्रातः 7:15 बजे	: ओ३म ध्वजारोहण के साथ महायज्ञ का उद्घाटन (केवल प्रथम दिन)
प्रातः 7:30 बजे	: ब्रह्मयज्ञ (सन्ध्या) प्रतिदिवस
प्रातः 8:00 से 11:00 बजे तक	: यजुर्वेद ब्रह्म पारायण महायज्ञ एवं वेदोपदेश
सायं: 3:00 से 6:00 बजे तक	: यजुर्वेद ब्रह्म पारायण महायज्ञ एवं वेदोपदेश

पूर्णाहुति–रविवार 21 दिसम्बर, 2014 प्रातः 11 बजे

आयोजक एवं निवेदक

समस्त निवासी अशोक कालोनी, अल्कापुरी, हापुड़

रोटरी क्लब, हापुड

सम्पर्क–सूत्र

विवेक त्यागी–मोबाइल–9837024560

योगमुद्रा में प्रवचन करते हुए पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज

उद्‌बोधन

आज हमें वक्ता नहीं बनना चाहिए। आज तो हमें अपने जीवन में संलग्न हो जाना है। जब तक हमारा स्वयं का जीवन ऊँचा न होगा तब तक हम संसार में किसी मानव को ऊँचा नहीं बना सकते। मैंने आज से बहुत पूर्व काल में अपने पूज्यपाद गुरुदेव से प्रश्न किया था कि यह संसार कैसे ऊँचा बन सकता है। उस समय मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने एक ही वाक्य कहा था 'यज्ञो मम् अस्ति यज्ञाः' जब मानव का जीवन यज्ञ जैसा पवित्र हो जाता है तो उसका जीवन इतना विचित्र बन जाता है कि उसके शरीर के कण–कण से उस यज्ञ की ज्योति प्रज्ज्वलित हो जाती है। मैंने अपने गुरुदेव से कहा कि प्रभु ! आप भी 'यज्ञाः'। उस समय उन्होंने कहा कि यदि मैं यज्ञ न करता तो मेरा जीवन यज्ञमय न होता। तो आज गुरु अस्चति विश्वम् भोगी नाना अस्ते' अहा! आज मुझे गुरु कोई न कह सकता था। जिज्ञासु बनने के पश्चात् गुरु की उपाधि प्राप्त होती है। तो मुनिवरो! देखो यह यज्ञ है।

पूज्यपाद-गुरुदेव

(यज्ञ प्रसाद अर्थात् यज्ञ का महत्त्व)